राष्ट्रपति ने 'गॉड टॉक्स विथ अर्जुन' के हिन्दी संस्करण का किया विमोचन

अध्यात्म भारत की आत्मा है : राष्ट्रपति

-> 16.11.2017 (देशप्राण)

योग व अध्यात्म ज्ञान सम्पूर्ण विश्व के लिए जरूरी

आज की पीढ़ी के लिए राजयोग जरूरी

योगदा सत्संग सोसायटी रांची के सौ वर्ष पूरे

रांची, 15 नवम्बर

अध्यात्म भारत की आत्मा है। विश्व को अध्यात्म और योग भारत की देन है। स्वामी परमहंस और विवेकानंद ने सम्पूर्ण विश्व में अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त किया। रोशनी, हवा और पानी जिस प्रकार सभी के लिए जरूरी है, उसी प्रकार योग व अध्यात्म ज्ञान सम्पूर्ण विश्व के लिए जरूरी है। यही सोच स्वामी परमहंस की थी।

उपरोक्त बातें राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने कही। वह बुधवार को रांची में योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ इंडिया के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। राष्ट्रपति श्री कोविन्द ने मौके पर स्वामी परमहंस योगानंद लिखित श्रीमद भगवद गीता के विस्तृत व्याख्या अर्थात गॉड टाक्स विथ अर्जुना के हिन्दी संस्करण का विमोचन किया। इस मौके पर अतिथि के रूप में राज्यपाल द्रोपदी मुर्मू के अलावा मुख्यमंत्री रघुवर दास उपस्थित थें। इससे पूर्व राष्ट्रपति के अलावा सभी अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने सम्बोधन में राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की धरती अध्यात्म की धरती रही है।

स्वामी परमहंस योगानंद लिखित श्रीमदभगवद गीता के गॉड टॉक्स विथ अर्जुना के हिन्दी संस्करण का विमोचन करते राष्ट्रपति कोविंद।

राष्ट्रपति ने योगदा सत्संग के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि अध्यात्म और मानवता के क्षेत्र में योगदा सत्संग के कार्य सराहनीय है। राष्ट्रपति ने कहा कि रांची के इस आश्रम में स्वामी परमहंस के अलावा वर्ष 1925 में गांधी जी के भी कदम पड़े। यह मेरे लिए सौभाग्य का मौका है कि मुझे एक बार पुनः यहां आने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि स्वामी परमहंस अध्यात्म का संदेशक थे। वह धर्म से परे थे और सभी धर्मों का सम्मान करते थे।

स्वामी परमहंस और स्वामी विवेकानंद ने पश्चिम में अध्यात्म का मार्ग खोला। दोनों ने ही राजयोग पर विशेष बल दिया था। आज की पीढ़ी के लिए राजयोग जरूरी है। अपने सम्बोधन के अंत में राष्ट्रपति ने कहा कि आशा करता हुं कि अध्यात्म व ध्यान केन्द्र और मानवीय सेवा के स्वामी परमहंस की विरासत को मठ ऐसी ही बढ़ाती रहेगी। मालूम हो कि एक सौ वर्ष पूर्व वर्ष 1917 में योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ इंडिया की स्थापना की गयी थी। गॉड टाक्स विथ अर्जुना के हिन्दी संस्करण ईश्वर-अर्जुन संवाद को पूरा करने में स्वामी नित्यानंद की टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

भारत मेरा अध्यात्मिक घर : स्वामी चिदानंद

इससे पूर्व अपने सम्बोधन में स्वामी चिदानंद ने कहा कि अध्यात्म और योग के रूप में विश्व को यह भारत की यह बड़ी देन है। उन्होंने कहा कि भारत मेरा अध्यात्मिक घर है। अध्यात्म लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है। यह मानव को आपस में बांटता नहीं है। अध्यात्म मानव जीवन में बदलाव लाती है। भारत को कई प्रकार के ईश्वरीय उपहार मिले हैं। ऋषि-मुनि से लेकर ध्यान व अध्यात्म गुरूओं की यहां लम्बी श्रृंखला रही है। आज विश्व को सबसे अधिक अध्यात्म की आवश्यकता है। योगदा सत्संग परिसर में आगमन के दौरान स्वामी स्मरानंद ने राष्ट्रपति को बताया कि मठ लगभग 18 एकड़ में फैला हुआ है। यहां पर एक वृक्ष है जिसके नीचे स्वामी जी की तस्वीर लगी है उस पेड़ की उम्र भी सौ साल से अधिक है। विमोचन समारोह के दौरान झारखंड सरकार के मंत्रीगण और भारी संख्या में विदेशी मेहमान उपस्थित थे।